# इकाई 1 : राजनीतिक भूगोल की प्रकृति, क्षेत्र एवं विकास (Nature, Scope and Development of Political Geography)

**इकाई की रूपरेखा**


1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 राजनीतिक भूगोल की प्रकृति, परिभाषा एवं क्षेत्र

- 1.2.1 राजनीतिक भूगोल की परिभाषा
- 1.2.2 राजनीतिक भूगोल का क्षेत्र
- 1.2.3 राजनीतिक भूगोल का अन्य सामाजिक विज्ञानों से सम्बन्ध
- 1.2.4 राजनीतिक भूगोल का व्यावहारिक महत्व

1.3 राजनीतिक भूगोल का विकास

- 1.3.1 वातावरण सम्बन्धों का अध्ययन
- 1.3.2 राष्ट्रीय शक्ति का अध्ययन
- 1.3.3 राजनीतिक क्षेत्रों का अध्ययन
- 1.3.4 राजनीतिक भूगोल का ऐतिहासिक विकास

1.4 सारांश

1.5 शब्दावली

1.6 सन्दर्भ ग्रन्थ

1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.8 अभ्यासार्थ प्रश्न


## 1.0 उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के उपरान्त आप समझ सकेंगे :

- राजनीतिक भूगोल की प्रकृति क्या है,
- राजनीतिक भूगोल की विभिन्न विद्वानों ने क्या परिभाषाएँ दी हैं,
- राजनीतिक भूगोल का अन्य सामाजिक विज्ञानों से क्या सम्बन्ध है,
- राजनीतिक भूगोल का विकास कैसे हुआ ।

## 1.1 प्रस्तावना (Introduction)

प्रस्तावित इकाई में राजनीतिक भूगोल की प्रकृति, परिभाषा, क्षेत्र एवं विकास का विस्तार से वर्णन किया गया है । इस इकाई के खण्ड 1.2 में राजनीतिक भूगोल की प्रकृति, परिभाषा, क्षेत्र एवं इसका अन्य सामाजिक विज्ञानों से सम्बन्ध का विवेचन किया गया है । खण्ड 1.3 राजनीतिक भूगोल के विकास से सम्बन्धित है, जिसमें

राजनीतिक भूगोल की विकास प्रक्रिया के तीन वर्गों क्रमश: वातावरण सम्बन्धों, राष्ट्रीय शक्ति एवं राजनीतिक क्षेत्रों के बारे में चर्चा की गई है । इसी खण्ड के उपखण्ड 1.3.2 में राजनीतिक भूगोल के ऐतिहासिक विकास के बारे में बताया गया है । खण्ड 1.4 में इस इकाई का सारांश दिया गया है । इकाई के अन्त में शब्दावली, सन्दर्भ ग्रन्थ, बोध प्रश्नों के उत्तर एवं अभ्यासार्थ प्रश्न दिए गए हैं ।

## 1.2 राजनीतिक भूगोल की प्रकृति, परिभाषा एवं क्षेत्र(Nature, Definition and Scope of Political Geography)

भूगोल एक सजीव, सक्रिय एवं प्रगतिशील विज्ञान है । वर्तमान में यह एक अन्तर्विषयक (Interdisciplinary) विषय के रूप में है । यह वातावरण एवं मानव में सम्बन्ध स्थापित कर पृथ्वी–तल पर व्याप्त विविधताओं का न केवल वर्णन करता है, अपितु उनका भौगोलिक कारण भी स्पष्ट करता है जिसके कारण क्षेत्रीय असमानताएँ दृष्टिगोचर होती हैं । इसलिए भूगोल को क्षेत्रीय वितरण (Areal Distribution) स्थानिक प्रतिरूप (Spatial pattern), स्थानिक विश्लेषण (Spatial Analysis), मानव–भूमि सम्बन्ध, मानव के वातावरण के साथ सम्बन्धों के रूप में परिभाषित किया जाता है । यही कारण है कि वर्तमान में भूगोल धर्म, औषध विज्ञान, जातीयता, कला आदि का भी अध्ययन करता है, फिर राजनीति इसकी परिधि से कैसे बाहर जा सकती है । वर्तमान काल में भूमण्डल का प्रत्येक क्षेत्र किसी न किसी राजनीतिक इकाई से सम्बद्ध है और राजनीतिक इकाई या राज्य पूर्णतया भौगोलिक वातावरण पर निर्भर है । एक राज्य या राष्ट्र का जीवन, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, आर्थिक साधन या शक्तिसम्पन्नता वहाँ के भौगोलिक वातावरण द्वारा न केवल प्रभावित होती है अपितु नियंत्रित एवं निर्धारित भी होती है । राजनीतिक भूगोल का अध्ययन प्राचीन है । ग्रीक व रोमन काल में राज्य को प्राकृतिक वातावरण से सम्बद्ध माना जाता था किन्तु इसकी महता का क्रमिक विकास हुआ, विशेषकर विगत विश्व–युद्धों के समय राजनीतिक गतिविधयों का भौगोलिक वातावरण में अध्ययन करने के प्रचलन से इसका अत्यधिक विकास हुआ । फलस्वरूप वर्तमान में राजनीतिक भूगोल, भूगोल की एक महत्वपूर्ण एवं विकसित शाखा है ।

### 1.2.1 **राजनीतिक भूगोल की परिभाषा** (Definition of Political Geography)

भूगोल को सामान्यतया दो शाखाओं प्राकृतिक एवं मानव भूगोल मे विभक्त किया जाता है । इन्हीं के अन्तर्गत समस्त भौगोलिक ज्ञान को समाहित करने का प्रयास किया जाता है । राजनीतिक भूगोल, मानव भूगोल की एक शाखा है जिसमें मानव के एक प्रमुख पक्ष राजनीति को भौगोलिक पर्यावरण के साथ समन्वय स्थापित कर अध्ययन किया जाता है ।

प्राचीन काल से ही राजनीतिक भूगोल को परिभाषित करने के प्रयास किए जाते रहे हैं । कान्ट ने सन् 1756 में व्यक्त किया कि राजनीतिक भूगोल राजनीतिक इकाइयों के सम्बन्ध एवं उनकी प्राकृतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करता है । इसके बाद विश्व के अनेक देशों के भूगोलवेत्ताओं ने राजनीतिक भूगोल को परिभाषित किया तथा इसकी विषय सामग्री को स्पष्ट किया । राजनीतिक भूगोल की कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं :

(i) **विगर्ट एवं साथियों के अनुसार** –

"राजनीतिक भूगोल का अध्ययन उन आन्तरिक भौगोलिक तथ्यों की व्याख्या करता है, जो राज्य को विशिष्टता प्रदान करते हैं, तथा राज्यों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करते हैं ।"

"The study of political geography deals with the internal geographical factors which contribute to the state's individuality and, at the same time, with the geographical factors which condition the external relations between states."

Weigert, H.W. and Others:

*Principles of Political Geography,* 1957, p. 18

(ii) **कार्लसन** ने अपनी पुस्तक "Geography and world Politics" में सन् 1958 में लिखा कि–

"राजनीतिक भूगोल पृथ्वी एवं राज्य के अन्तर–सम्बन्ध का अध्ययन करता है, अत: यह राज्यों में भौगोलिक सम्बन्ध व्यक्त करता है ।"

"Being the study of the inter–relationship of the earth and state,it contributes a geographical interpretation of the international relationships between states."

–L.Carlson: *Geography and World Politics*, 1958, p.4

(iii) **रिचर्ड हार्टशोर्न** ने "Political Geography in the Modern World, Journal of Conflict Resolution, Vol. 4. 1960, p.52" में लिखा कि –

"राजनीतिक भूगोल भिन्न–भिन्न स्थानों में विभिन्न राजनीतिक उपक्रमों का पृथ्वीतल पर व्याप्त विविध लक्षणों से सम्बन्धित कर अध्ययन करता है ।"

Political geography is, "the study of the variations of political phenomena from place to place in interconnection with variations in other features of the earth."

–Richard Hartshorne: *Political Geography in the Modern World,*

Journal of Conflict Resolution, Vol. 4.1960, p.52

(iv) एन.जे.जी. पोण्ड्स से अपनी पुस्तक "Political Geography" में सन् 1963 में राजनीतिक भूगोल को परिभाषित करते हुए लिखा कि –

"राजनीतिक भूगोल राजनीतिक दृष्टि से संगठित क्षेत्रों, उनके संसाधनों, विस्तार एवं उन कारणों से सम्बन्धित है जिसके कारण एक विशिष्ट भौगोलिक स्वरूप का विकास होता है ।"

"Political geography is concerned with politically organized areas, their resources and extent, and the reasons for the particular geographical forms which they assume."
–N.J.G. Pounds: *Political Geography,* 1963. p.1

(v) ए.ई.मूडी ने अपनी पुस्तक "Geography Behind Politics" में सन् 1963 में लिखा कि –

"राजनीतिक भूगोल का अध्ययन मुख्यतया वर्तमान दशाओं से सम्बन्धित होता है किन्तु भूतकालिक घटनाओं को आज अवस्थित स्वरूप के परिवर्तक के रूप में ध्यान में रखा जाता है ।"

"Studies in Political Geography are primarily concerned with present conditions, but, in view of the past events in modifying what exists today?"

–A.E. Moodie: *Geography Behind Politics*, 1963, p. 17

(vi) एस.बी. कोहेन ने सन् 1964 में भूगोल के बारे में लिखा कि –

"राजनीतिक भूगोल वह शाखा है जो राजनीतिक उपक्रमों को भौगोलिक परिवेश में प्रस्तुत करती है, स्थान–स्थान पर राजनीतिक उपक्रमों की भिन्नता राजनीतिक भूगोल की मूल भावना है।"

"Political geography can be described as that discipline which treats political phenomena geographically…the differentiation of political phenomena from place to place in the essence of political geography."

- Cohen, S.B.: Geography Politics in a Divided World, 1964. p. (iii).

(vii) जे.आर.बी. प्रेसकॉट ने अपनी पुस्तक "Political Geography" में सन् 1972 में राजनीतिक भूगोल को परिभाषित करते हुए लिखा कि –

"राजनीतिक भूगोल राजनीतिक निर्णयों एवं क्रियाओं से उद्भूत भौगोलिक परिणामों से सम्बन्धित है तथा उन सभी भौगोलिक तत्वों को इसमें यथोचित मान्यता प्रदान की जाती है जो राजनीतिक क्रियाओं को प्रभावित करते हैं ।"

"Political geographers are therefore concerned with the geographical consequence of these political decisions and actions, the geographical factors which were considered during the making of any decision, and the role of any geographical factors which influence the out come of political actions."

–Prescott. J.R.V.: *Political Geography*, 1972, p.2.

(viii) रिचर्ड मूर ने सन् 1975 में अपनी पुस्तक "Political Geography" में लिखा कि –

"राजनीतिक भूगोल, राजनीतिक एवं भौगोलिक उपक्रमों के मध्य स्थानगत अथवा क्षेत्रीय अर्न्तसम्बन्ध को स्पष्ट करता है ।"

"Political Geography is concerned with the spatial interaction between political, geographical phenomena."

–Richard Muir : Modern Political Geography, 1975, p.2.

उपर्युक्त परिभाषाओं में विभिन्न भूगोलवेत्ताओं ने राजनीतिक भूगोल को परिभाषित कर उसके अन्तर्गत आने वाले विषय क्षेत्र को भी बताने का प्रयास किया है । पोण्ड्स द्वारा दी गई परिभाषा से स्पष्ट होता है कि राजनीतिक भूगोल राज्य से सम्बन्धित होता है । उनके अनुसार राजनीतिक भूगोल में उन समस्त प्राकृतिक और आर्थिक संसाधनों का अध्ययन किया जाता है जो राज्य से सम्बन्धित है । इसके अतिरिक्त उन कारणों का भी अध्ययन करता है जिनसे राज्य का विशेष स्वरूप विकसित होता है । अत: राज्य के प्राकृतिक स्वरूप एवं आर्थिक संसाधनों का अध्ययन इसके अन्तर्गत किया जाता है ।

इसी प्रकार हार्टशोर्न के अनुसार राजनीतिक भूगोल पृथ्वी तल पर प्राकृतिक, आर्थिक, मानवीय समानताओं एवं असमानताओं के साथ ही राजनीतिक स्वरूप में व्याप्त विविधताओं का अध्ययन करता है, क्योंकि राजनीतिक भिन्नता का कारण भी अन्तत: वातावरण की भिन्नता होती है । वहीं मूडी महोदय ने राजनीतिक भूगोल में ऐतिहासिक अध्ययन को अधिक महत्व दिया है । उनके अनुसार वर्तमान राजनीतिक दशाओं का अध्ययन यद्यपि राजनीतिक भूगोल का उद्देश्य है, किन्तु ये दशाऐं अपना इतिहास रखती हैं । जब तक उन कारणों का विश्लेषण नहीं किया जाएगा, जिनके कारण वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था का जन्म हुआ, तब तक राजनीतिक भूगोल का अध्ययन एकांगी रहेगा । इसी प्रकार एस.बी. कोहेन ने स्पष्ट किया कि राजनीतिक भूगोल में एक ओर सम्पूर्ण राजनीतिक घटनाक्रम समाहित है तो दूसरी ओर भौगोलिक पर्यावरण जो निरन्तर उसे परिचालित करता रहता है ।

अन्तत: उक्त सभी परिभाषाओं के विचार इस मूल तथ्य पर आधारित है कि "राजनीतिक भूगोल राज्य की सीमाओं, क्षेत्र एवं संसाधनों से सम्बन्धित है एवं

राजनीतिक क्रियाओं का मानव और आर्थिक भूगोल पर पड़ने वाले प्रभावों को व्यक्त करता है ।"

### 1.2.2 **राजनीतिक भूगोल का क्षेत्र** (Scope of Political geography)

राजनीतिक भूगोल की परिभाषाओं से स्पष्ट है कि यह राज्य एवं प्राकृतिक वातावरण में सम्बन्ध को व्यक्त करता है । यह सम्बन्ध मुख्यतया दो प्रकार का होता है: प्रथम– राज्य का आन्तरिक प्रशासन, प्राकृतिक साधन एवं जनसंख्या और द्वितीय– एक राज्य का दूसरे राज्य के साथ सम्बन्ध सम्पूर्ण विश्व विविध भौगोलिक वातावरण से युक्त है तथा इसमें अनेक राज्य स्थित हैं । किसी भी राज्य के तीन प्रमुख तत्व होते हैं – (1) क्षेत्र, (2) मानव, एवं (3) राजनीतिक व्यवस्था । इनमें से किसी भी एक तत्व के अभाव में राज्य अस्तित्व–रहित हो जाता है । राज्य की शाक्त सम्पन्नता अथवा निर्बलता वहाँ के भौगोलिक वातावरण द्वारा ही निर्धारित होती है । अत: राजनीतिक भूगोल का क्षेत्र अत्यधिक व्यापक है । इसके अध्ययन की इकाई यद्यपि एक राज्य होता है, किन्तु समस्त विश्व का अध्ययन इसके अन्तर्गत किया जाता है । राजनीतिक भूगोल के अध्ययन क्षेत्र में निम्नलिखित को सम्मिलित किया जाता है :

(i) राज्य के, भौगोलिक स्वरूप का अध्ययन – इसके अन्तर्गत राज्य के भौगोलिक विस्तार, वातावरण एवं राजनीतिक सीमाओं का अध्ययन किया जाता है ।

(ii) प्राकृतिक संसाधनों का अध्ययन–इसमें राज्य के खनिज. कृषि, परिवहन एवं अन्य आर्थिक संसाधनों का अध्ययन किया जाता है ।

(iii) राज्य की जनसंख्या का अध्ययन–इसके अन्तर्गत राज्य की जनसंख्या के सामाजिक एवं प्रजातीय स्वरूप का अध्ययन सम्मिलित है । इसमें भाषा, धर्म, जाति आदि तत्वों का अध्ययन किया जाता है ।

(iv) राजनीतिक समझौतों का अध्ययन–राजनीतिक भूगोल में सभी समझौतों के भौगोलिक स्वरूप का अध्ययन किया जाता है ।

(v) विश्व की राजनीतिक घटनाओं का अध्ययन – राजनीतिक भूगोल में वर्तमान विश्व की राजनीतिक घटनाओं का भौगोलिक अध्ययन किया जाता है ।

(vi) भौगोलिक उपक्रमों का अध्ययन–राजनीतिक भूगोल में भौगोलिक उपक्रमों का भी अध्ययन किया जाता है ।

(vii) निर्वाचनों का अध्ययन–राजनीतिक भूगोल में निर्वाचन को प्रभावित करने वाले भौगोलिक तथ्यों के साथ–साथ निर्वाचन परिणामों का विश्लेषण, मानचित्र करण एवं उनके व्यवहारात्मक पक्ष का विवेचन किया जाता है ।

(viii) अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का अध्ययन–अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की व्यावहारिक भूमिका राजनीतिक भूगोल का मुख्य विषय है ।

अत: संक्षेप में राजनीतिक भूगोल राज्य की समस्त गतिविधियों, राज्यों के अन्तर सम्बन्धों, क्षेत्रीय सहयोग एवं विश्व संगठनों का अध्ययन करता है ।

**बोध प्रश्न** – 1

1. एन.जे.जी. पोण्ड्स द्वारा लिखित पुस्तक का क्या नाम है?
2. "Geography Behind Politics" पुस्तक के लेखक का नाम क्या है?
3. "राजनीतिक भूगोल, राजनीतिक एवं भौगोलिक उपक्रमों के मध्य स्थानगत अथवा क्षेत्रीय अन्तर्सम्बन्ध को स्पष्ट करता है ।" उक्त परिभाषा देने वाले भूगोलवेत्ता का नाम क्या है?
4. राज्य के भौगोलिक स्वरूप में किन तत्वों का अध्ययन किया जाता है?
5. राज्य की जनसंख्या में अध्ययन किए जाने वाले तत्व कौन से हैं?

### 1.2.3 राजनीतिक भूगोल का अन्य सामाजिक विज्ञानों से सम्बन्ध

(Political Geography and Its Relation with Other Social Sciences)

राजनीतिक भूगोल अन्य सामाजिक विज्ञानों से भी सम्बन्धित है । वास्तव में राजनीतिक भूगोल में अन्य विषयों से उपयोगी तथ्यों को समाहित किया गया है तथा उनका भौगोलिक तथ्यों के साथ सामन्जस्य स्थापित कर प्रस्तुत किया गया है । अत: राजनीतिक भूगोल विशेष रूप से इतिहास, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध और राजनीतिक विज्ञान से सम्बन्धित है, जिसका संक्षिप्त विवेचन निम्नलिखित है.

**राजनीतिक भूगोल एवं इतिहास**

(Political Geography and History):

राजनीतिक भूगोल का इतिहास से अत्यधिक घनिष्ठ सम्बन्ध है । इतिहास के माध्यम से ही राज्य अथवा शासन व्यवस्था की सफलता अथवा असफलता का मालूम चलता है । राजनीतिक भूगोल में केवल वर्तमान राज्य की दशाओं का अध्ययन ही पर्याप्त नहीं है अपितु उन भूतकालीन दशाओं का अध्ययन भी आवश्यक है जिनके कारण राज्य का वर्तमान स्वरूप अस्तित्व में आया ।

अत: राजनीतिक भूगोल में राज्य के ऐतिहासिक पक्ष का अध्ययन आवश्यक होता है ।

**राजनीतिक भूगोल एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध**

(Political Geography and International Relations)

राजनीतिक भूगोल में राज्य के एकाकी स्वरूप का अध्ययन ही महत्वपूर्ण नहीं होता है अपितु उसका अन्य राज्यों के साथ सम्बन्ध भी महत्व रखता है । क्योंकि वर्तमान में विश्व में परिवहन एवं संचार के साधनों का इतना विकास हो गया है कि प्रत्येक छोटी घटना का विश्वव्यापी प्रभाव पड़ता है । अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध एक राज्य का दूसरे राज्यों से सम्बन्ध एवं उनकी नीतियों को स्पष्ट करता है । अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का भौगोलिक अध्ययन राजनीतिक भूगोल को राज्य स्तर से अन्तर्राष्ट्रीय

स्तर पर ला देता है । विश्व के अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का अध्ययन या अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों और विवादों का अध्ययन राजनीतिक भूगोल की महत्वपूर्ण विषय सामग्री है । अत: राजनीतिक भूगोल का अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों से घनिष्ठ सम्बन्ध है ।

**राजनीतिक भूगोल और राजनीतिक विज्ञान**

(Political Geography and Political Science)

राजनीतिक भूगोल राजनीतिक विज्ञान से भी घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है । राजनीतिक विज्ञान के अन्तर्गत राज्य का अध्ययन, वहाँ की राज्य व्यवस्था के स्वरूप, सिद्धान्त, प्रक्रिया आदि का अध्ययन किया जाता है । सफल राज्य व्यवस्था वही होती है जो वातावरण के साथ समानुकूलन कर सके । उपयुक्त वातावरण में राज्य अपने आर्थिक एवं मानवीय संसाधनों का अधि उपयोग कर स्वयं को शक्तिशाली बनाता है । इस सम्बन्ध को राजनीतिक भूगोल स्पष्ट करता है । राजनीतिक भूगोल स्पष्ट करता है कि राज्य के विभिन्न तत्वों और राज्य की शासन व्यवस्था एवं उसकी नीतियों में कितना सफल सम्बन्ध है । राज्य व्यवस्था, निर्वाचन प्रणाली एवं परिणामों का अध्ययन दोनों विज्ञानों में घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करता है ।

### 1.2.4 राजनीतिक भूगोल का व्यावहारिक महत्व

(Political Geography and Its Applied Importance)

राजनीतिक भूगोल का अत्यधिक व्यावहारिक महत्व है, क्योंकि राज्य के निवासियों एवं राजनीतिज्ञों दोनों के लिए यह उपयोगी है । राजनीतिक भूगोल में राजनीतिक परिस्थितियों एवं भौगोलिक परिस्थितियों का अध्ययन करने के कारण अधिक उपयोगिता है । व्यावहारिक दृष्टि से इसका महत्व निम्नलिखित बिन्दुओं से स्पष्ट है:

(i) राज्य के प्राकृतिक वातावरण का ज्ञान–राजनीतिक भूगोल में राज्य के प्राकृतिक स्वरूप एवं उसके प्रभावों का विवेचन किया जाता है । इसमें राज्य की स्थिति, आकार, विस्तार, जलवायु, धरातल, तटरेखा आदि को सम्मिलित किया जाता है । इन प्राकृतिक तत्वों का राज्य के विकास एवं रक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी राजनीतिक भूगोल से होती है ।

(ii) राज्य की आन्तरिक समस्याओं का समाधान–राजनीतिक भूगोल राज्य के प्राकृतिक, आर्थिक एवं जनसंख्या सम्बन्धी तथ्यों का विश्लेषण कर राज्य की आन्तरिक समस्याओं के समाधान में योग देता है ।

(iii) देश की सीमा सुरक्षा में सहायक–राजनीतिक भूगोल राज्य की सीमाओं की प्रकृति, कार्य, सामरिकता आदि का अध्ययन कर सीमा सुरक्षा में सहायक देता है ।

(iv) शासन व्यवस्था का भौगोलिक दृष्टि से मूल्यांकन–राजनीतिक भूगोल शासन व्यवस्था एवं विभिन्न भौगोलिक तत्वों का उस पर प्रभाव का अध्ययन करता है ।

वातावरण की अनुकूलता पर ही राज्य प्रशासन सफल हो सकता है । अत: राज्यों की शक्ति एवं विकास की दिशा का सही ज्ञान इसमें हो जाता है ।

(v) निर्वाचन प्रणाली का ज्ञान–राजनीतिक भूगोल में निर्वाचन प्रणाली एवं परिणामों का अध्ययन किया जाता है । इसमें सामान्य जनता को निर्वाचन सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त हो जाता है, तथा शासन तन्त्र निर्वाचन प्रणाली में सुधार की ओर प्रवृत होता है ।

(vi) अन्तर्राष्ट्रीयता का विकास–राजनीतिक भूगोल विश्व के राज्यों के आपसी सम्बन्धों का अध्ययन करता है । यह विभिन्न विश्वव्यापी अथवा क्षेत्रीय संगठनों, अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों एवं विवादों का सही रूप प्रस्तुत करता है । इसमें राजनीतिक तत्वों के साथ प्राकृतिक तत्वों का भी प्रभाव होता है । अत: इस प्रकार के अध्ययन से अन्तर्राष्ट्रीयता का मार्ग प्रशस्त होता है ।

(vii) विश्व शांति में सहायक–राजनीतिक भूगोल अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के भौगोलिक स्वरूप को स्पष्ट कर राज्यों में आपसी सहयोग की भावना को जागृत करता है । विश्व के देशों की सम्पन्नता एवं विपन्नता का एक मात्र कारण भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं । जब यह भावना राष्ट्रों में आ जाएगी तो स्वत: ही अनेक गतिरोध दूर हो जाएंगे और विश्व शांति की दिशा में यह महत्वपूर्ण योग होगा ।

**बोध प्रश्न** – 2

1. राजनीतिक भूगोल विशेषत: किन सामाजिक विज्ञानों से सम्बन्धित है?
2. राज्य के ऐतिहासिक पक्ष का भौगोलिक अध्ययन किस सामाजिक विज्ञान से सम्बन्धित है?
3. अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों, समझौतों एवं विवादों का अध्ययन राजनीतिक भूगोल को किस सामाजिक विज्ञान से सम्बन्धित करता है?
4. राजनीतिक भूगोल राज्य की सीमाओं की प्रकृति, कार्य, सामरिकता का अध्ययन कर, राज्य की कैसे सहायता करता है?
5. राजनीतिक भूगोल विश्व शांति में कैसे सहायक है?

## 1.3 (राजनीतिक भूगोल का विकास (Development) of Political Geography)

राजनीतिक भूगोल का विकास क्रमिक रूप से हुआ है । इसका अध्ययन 2,000 वर्षो से भी अधिक प्राचीन है किन्तु इसका एक विशिष्ट विषय के रूप में उद्भव 19वी शताब्दी के उत्तर(में हुआ । इससे पूर्व इसका अध्ययन मानव भूगोल में सम्मिलित था । अध्ययन की सुविधा के दृष्टिकोण से राजनीतिक भूगोल की विकास प्रक्रिया को तीन वर्गो में विभक्त किया जा सकता है –

(i) वातावरण सम्बन्धों का अध्ययन
(The Study of Environmental Relationships)

(ii) राष्ट्रीय शक्ति का अध्ययन, एवं
(The Study of National Power)

(iii) राजनीतिक क्षेत्रों का अध्ययन ।
(The study of Political Regions)

### 1.3.1 **वातावरण सम्बन्धों का अध्ययन**

प्राचीन विद्वानों ने वातावरण एवं मानव के सम्बन्धों को व्यक्त करते समय अनेक विचार क्षेत्रीय अथवा राजनीतिक भिन्नताओं के सम्बन्ध में प्रस्तुत किए । प्राचीन यूनानी दार्शनिक हिप्पोक्रेट्स (Hippocrates, 460–376 B.C.) ने प्राकृतिक वातावरण एवं मानव के विकास के सम्बन्ध में विचार व्यक्त किए । प्लेटों (Plato, 425–347 B.C.) एवं अरस्तु (Aristotle, 383–322 B.C.) ने भी इसी प्रकार के विचार प्रस्तुत किए । अरस्तु ने अपनी पुस्तक 'पोलिटिक्स' में लिखा है कि ठण्डे क्षेत्रों के, विशेषकर यूरोप के निवासियों में अत्यधिक उत्साह होता है, किन्तु उनमें कौशल और बुद्धिमता की कमी होती है, इसी कारण वे अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्र रहे, किन्तु राजनीतिक विकास नहीं किया और न अन्य देशों पर शासन करने की क्षमता रखते हैं । एशिया के निवासी कौशल एवं बुद्धिमता से युक्त हैं, किन्तु उत्साह के अभाव में वे अन्य लोगों के दास रहे हैं । एक अन्य यूनानी दार्शनिक स्ट्रेबो (Strabo, 63B.C.–24A.D.) ने अपनी पुस्तक 'ज्योग्राफी' में व्यक्त किया कि एक विशाल राज्य के लिए शक्तिशाली केन्द्रीय सरकार एवं एक प्रशासक होना आवश्यक है । उन्होंने रोमन साम्राज्य में स्थिति, जलवायु एवं संसाधनों की दृष्टि से इटली को सर्वोत्तम प्रदेश बतलाया ।

इसके बाद अन्धयुग में भौगोलिक विचार धार्मिकता से युक्त एवं सीमित रहे । 16वीं शताब्दी में पुन: प्राकृतिक वातावरण एवं राजनीतिक स्वरूप में सम्बन्ध स्थापित किया जाने लगा । बोदिन (Bodin, 1530–96A.D.) ने व्यक्त किया कि राष्ट्रीय विशेषताएँ जलवायु और धरातल के साथ परिवर्तित होती रहती हैं । मॉन्टेस्क्यू (Montesquieu,1689–1755) ने जलवायु, धरातल, महाद्वीप एवं द्वीप का मनुष्य, राजनीतिक व्यवस्था एवं नियमों पर प्रभाव व्यक्त किया । उनके अनुसार, मैदानी प्रदेश वृहत साम्राज्य के लिए सहायक है, जबकि पर्वतीय क्षेत्र स्वतन्त्रता की भावना के पोषक तथा स्वतन्त्रता के लिए उत्कण्ठित रहते हैं । द्वीप पर रहने वाले लोग अपनी स्वतन्त्रता के प्रति अन्य प्रदेशों के लोगों की तुलना में अधिक सजग होते हैं एवं अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं ।

19वीं शताब्दी में वातावरण से सम्बन्धित विचारों को परिमार्जित ढंग से प्रस्तुत किया गया । इस समय राजनीतिक भूगोल का विकास दो जर्मन भूगोलवेत्ताओं कार्ल रिटर (Karl Ritter, 1779–1859) एवं फ्रेडरिक रेटजेल (Ratzel, 1844–1904) द्वारा किया गया ।

### 1.3.2 **राष्ट्रीय शक्ति का अध्ययन**

राजनीतिक भूगोल की द्वितीय मुख्य प्रवृति भौगोलिक परिवेश में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति का अध्ययन है । इसके अन्तर्गत उन सभी कारणों का विश्लेषण किया जाता है जो एक राज्य की राजनीतिक शक्ति को प्रभावित करते हैं । रेटजेल ने 'जैविक राज्य' (Organic State) की विचारधारा प्रस्तुत की । उनके अनुसार– 'राज्य एक जीव है, जो स्थान के लिए निरन्तर संघर्ष करता रहता है ।' एक राज्य उपयुक्त भौगोलिक वातावरण में अपने क्षेत्र का विस्तार करता है, तत्पश्चात् एक शक्तिशाली राज्य के रूप में विकसित हो जाता है ।

रेटजेल की सन् 1897 में पोलिटिकल ज्योग्राफी' (Politische Geographic) प्रकाशित हुई । इसे राजनीतिक भूगोल का प्रथम क्रमबद्ध ग्रन्थ माना जाता है । इस पुस्तक के अनुसार राज्य का क्षेत्र राज्य की शक्ति का घोतक है, यदि राज्य के क्षेत्र में कमी आती है तो राज्य कमजोर होता है ।

स्विडिश भूगोलवेत्ता रूडोल्फ केजेलेन (Rudolf Kjellen,1864–1922) ने रेटजेल से मिलते–जुलते विचार प्रस्तुत किए । उन्होंने राज्य को जीवित इकाई के रूप में माना तथा यह स्पष्ट किया कि राज्य की नैतिक एवं ज्ञानात्मक क्षमता का भी राज्य की शक्ति पर प्रभाव पड़ता है । केजेलेन ने ही सर्वप्रथम 'जियोपोलिटिक (Geopolitick) शब्द का प्रयोग किया । उन्होंने यह विचार भी प्रस्तुत किया कि सामुद्रिक शक्ति का अन्त होकर वास्तविक शक्ति स्थलीय राष्ट्रों के हाथों में होगी तथा जर्मनी को उन्होंने प्रमुख स्थलीय शक्ति के रूप में वर्णित किया ।

राजनीतिक भूगोल में राष्ट्रीय शक्ति के अध्ययन की प्रक्रिया में 'भू–राजनीति' के सिद्धान्त का विकास हुआ । इसके प्रमुख प्रतिपादक जर्मनी के भूगोलवेत्ता एवं सैनिक अधिकारी कार्ल हाशोफर (Karl Karl Haushofer, 1869–1946) थे । हाशोफर भी रेटजेल के समान राज्य को जीव मानते थे एवं क्षेत्र की आवश्यकता को स्वीकार करते थे, किन्तु रेटजेल से भिन्न वे राष्ट्रवादी थे तथा अपने विचार पूर्णतया जर्मनी पर केन्द्रित रखते थे ।

अमेरिकी विद्वान एवं नौसेना के विशेषज्ञ एल्फ्रेड थायर महान (Alfred Thayer Mahan, 1840 –1914) ने जर्मन विद्वानों से भिन्न विचार प्रस्तुत किए एवं सामुद्रिक शक्ति को अधिक महत्व दिया । विश्व शक्ति के अध्ययन से सम्बन्धित प्रसिद्ध सिद्धान्त "हृदय क्षेत्र का सिद्धान्त" (Heartland Theory Theory) का प्रतिपादन ब्रिटिश भूगोलवेत्ता सर हलफोर्ड मैकेण्डर (Sir Halford Mackinder, 1861–1947) ने सन् 1904 में किया । उनके अनुसार यूरेशिया महाद्वीप के उत्तरी और आन्तरिक क्षेत्र में एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ सामुद्रिक शक्ति प्रवेश नहीं कर सकती । यही क्षेत्र अन्त मे प्रमुख स्थलीय शक्ति के रूप में उभर कर आएगा ।

अमेरिकी भूगोलवेत्ता निकोलस जे. स्पाइकमेन (Nicholas J: Spykman, 1893–1943) ने 'रिमलैण्ड का सिद्धान्त' का प्रतिपादन किया । उसमें उन्होंने यूरेशिया

पर अधिकार के पश्चात्. विश्व पर अधिकार का विचार प्रस्तुत किया । इसके लिए उन्होंने 'हार्टलैण्ड' के चारों ओर स्थित देशों को 'रिमलैण्ड' की संज्ञा दी तथा उन्हीं को सामरिक दृष्टि से सबसे अधिक उपयुक्त बतलाया ।

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् तकनीकी विकास के फलस्वरूप विश्व के सामरिक दृष्टिकोण में परिवर्तन आया । अब वायु शक्ति की प्रधानता हो गई । इन नवीन तथ्यों को ध्यान में रखकर मेजर एलेक्जेन्डर–डी–सेवरस्की ने अपने विचार व्यक्त किए । उन्होंने शक्ति क्षेत्रों को उत्तरी अमेरिका एवं यूरेशिया में विभक्त किया तथा यह मत व्यक्त किया कि प्रमुख औद्योगिक राष्ट्रों को अपनी सैनिक स्थिति सुदृढ़ करने का सदैव प्रयत्न करते रहना चाहिए ।

**बोध प्रश्न** – 3

1. अरस्तु द्वारा लिखी गई पुस्तक का क्या नाम है?
2. 19वीं शताब्दी में राजनीतिक भूगोल को विकसित करने वाले दो जर्मन भूगोलवेत्ताओं के क्या नाम हैं?
3. 'जैविक राज्य' की विचारधारा किस भूगोलवेत्ता ने प्रस्तुत की?
4. 'जियोपोलिटिक' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किस भूगोलवेत्ता ने किया?
5. निकोलस जे. स्पाइकमेन द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त का क्या नाम है?

### 1.3.3 राजनीतिक क्षेत्रों का अध्ययन

20वीं शताब्दी में यद्यपि राष्ट्रीय शक्ति से सम्बन्धित कार्यों की प्रमुखता रही, किन्तु राजनीतिक भूगोल से सम्बन्धित समस्याओं का गहन अध्ययन भी किया जाने लगा । सन् 1921 में इसा बोमेन (Isaiah Bowman) की पुस्तक 'The New World' प्रकाशित हुई, जिसमें विश्व के समस्त देशों का राजनीतिक भूगोल के दृष्टिकोण से अध्ययन प्रस्तुत किया गया । इसके बाद राजनीतिक भूगोल के अध्ययन को तीन उपविभागों में विभक्त किया जा सकता है:

(i) राजनीतिक क्षेत्रों का सैद्धान्तिक अध्ययन,
(Theoretical Studie of Political Regions)

(ii) राजनीतिक उपक्रमों का अध्ययन, एवं
(Studies of Political Phenomena)

(iii) विशिष्ट राजनीतिक क्षेत्रों का अध्ययन ।
(Studies of Specifice Political Areas)

**(i) राजनीतिक क्षेत्रों का सैद्धान्तिक अध्ययन –**

राजनीतिक भूगोल सैद्धान्तिक दृष्टि से अपेक्षाकृत कम कार्य किया गया । व्हिटिलिसी (Whittlesey) के अनुसार राजनीतिक घटनाओं में क्षेत्रीय भिन्नता ही राजनीतिक भूगोल का मूल तत्व है । इसी प्रकार हेन्स वीगर्ट, टी.हेरमन, हार्टशोर्न आदि भूगोलवेत्ताओं ने राजनीतिक भूगोल की विषयवस्तु को स्पष्ट किया ।

राजनीतिक क्षेत्र के अन्तर्गत राज्य से सम्बन्धित तथ्य, जैसे–राजधानी, सीमाएँ, प्रशासनिक विभाग आदि सम्मिलित किए जाते हैं । राजनीतिक भूगोल में अध्ययन के लिए हार्टशोर्न ने सन् 1935 में 'आकृतिक उपागम' (Morphological Approach) प्रस्तुत किया । सन् 1950 में उन्होंने इसमें परिवर्तन कर 'कार्यात्मक उपागम' (Functional Approach) का प्रतिपादन किया । इसी प्रकार सन् 1955 में स्टीफन जोन्स ने राजनीतिक क्षेत्रों के अध्ययन के लिए 'संयुक्त क्षेत्र का सिद्धान्त' (Unified Field Theory) का प्रतिपादन किया । जीन गॉटमेन ने राजनीतिक क्षेत्रों गे क्षेत्रीय संगठन के निर्धारण पर विचार प्रस्तुत किए । डेविड नेफ्ट के द्वारा प्रस्तुत 'सांख्यिकी सूत्र' के द्वारा एक्? राज्य का विदेशी क्षेत्र में सापेक्षित प्रभाव ज्ञात किया जा सकता है ।

(ii) **राजनीतिक उपक्रमों का अध्ययन** –

राजनीतिक शक्तियों द्वारा उत्पन्न होने वाले तथ्यों तथा राजनीतिक शक्तियों को परिचालित करने वाले विचारों को राजनीतिक उपक्रमों के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाता है । विशिष्ट राजनीतिक तथ्यों, जैसे–सीमाएँ, राजधानी आदि पर अनेक लेख एवं पुस्तकों का प्रकाशन हुआ । सीमाओं पर एस.डब्लू, बोग्स, स्टीफन जोन्स, विक्टोरियो अदामी ने पुस्तकें लिखीं । जोन्स, नॉरमन, पौण्ड्स ई.फिशर लेडिस क्रिस्टोफ, जान ब्रोक, एडवर्ड उलमेन आदि ने सीमाओं से सम्बन्धित लेख लिखे । राजधानियों पर ओ.एच.के. स्पेट और वी. कोर्निश का कार्य महत्वपूर्ण है । एलेक्जेंडर मेलामिड और जी.डब्लू.एस. रोबिन्सन ने तटस्थ क्षेत्रों पर तथा जे.आर.वी प्रेस्काट और जान.के.राइट का निर्वाचन से सम्बन्धित कार्य विशेष उल्लेखनीय है ।

(iii) **राजनीतिक क्षेत्रों का अध्ययन** –

राजनीतिक भूगोल में किसी क्षेत्र विशेष को आधार मानकर भी उसका अध्ययन किया जाता हे । इसमें विशेषकर राजनीतिक समस्या से युक्त क्षेत्रों का अध्ययन विशेष महत्व रखता है, क्योंकि इसमें राजनीतिक समस्याओं के लिए उत्तरदायी कारणों को स्पष्ट कर भौगोलिक दृष्टिकोण से उनका निराकरण प्रस्तुत किया जाता है । एस. वामबाघ ने प्रथम विश्वयु(के पश्चात् हुए जनमत संग्रह का अध्ययन किया । एस. साउसरमेन ने सन् 1918 के पश्चात यूरोप में हुए क्षेत्रीय परिवर्तनों को स्पष्ट किया । कीथ बुचनन ने उत्तरी नाइजीरिया की एकता एवं अनेकता का तथा स्पेट ने भारतीय उपमहाद्वीप के बारे में महत्वपूर्ण विचार दिए । बी.एल. सुखवाल ने भारत के राजनीतिक भूगोल के विविध पक्षों की व्याख्या पर एक पुस्तक लिखी । ए.ई. मूडी, हार्टशोर्न, रॉबर्ट प्लाट और जॉर्ज हाफमेन ने अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं द्वारा उत्पन्न समस्याओं पर विचार प्रस्तुत किए ।

### 1.3.4 **राजनीतिक भूगोल का ऐतिहासिक विकास**

(Historical Development of Political Geography)

राजनीतिक भूगोल के ऐतिहासिक विकास से अभिप्राय इसके समयानुकूल विकास की प्रक्रिया से है । संक्षेप में राजनीतिक भूगोल के एतिहासिक विकास को निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है–

**राजनीतिक भूगोल के प्रारम्भिक प्रवर्तक** – हिप्पोक्रेटस, प्लेटो, अरस्तू आदि विचारकों ने राजनीतिक भूगोल से सम्बन्धित विचार प्रस्तुत किए । यद्यपि इस काल में राजनीतिक भूगोल का अलग से विकास नहीं हो पाया था । यह कार्य 17वीं शताब्दी रो प्रारम्भ होता है ।

17**वीं शताब्दी में राजनीतिक भूगोल** – विलियम पेटी ने 17वीं शताब्दी के मध्य में व्यक्त किया कि भूगोल राजनीति को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । उन्होंने अनेक राजनीतिक भौगोलिक पक्षों, जैसे – राज्य का भौगोलिक प्रभाव क्षेत्र, राजधानी को नियंत्रित करने वाले तत्वों आदि का विश्लेषण किया ।

18**वीं शताब्दी में राजनीतिक भूगोल** – इस काल में वर्तमान भूगोल के प्रमुख प्रवर्तक इमेन्यूअल काण्ट थे । उन्होंने भूगोल की अनेक शाखाओं के साथ राजनीतिक भूगोल का भी उल्लेख किया । उनके प्रमुख जर्मन शिष्यों – फ्रेडरिक, हेनरिच, हम्बोल्ट, कार्ल रिटर, रेटजेल आदि ने राजनीतिक भूगोल के विकास में महत्वपूर्ण योग दिया ।

19**वीं शताब्दी में राजनीतिक भूगोल** – इरा काल में रेटजेल ने राजनीतिक भूगोल का क्रमब(विवेचन अपनी पुस्तक 'Politische Geographie' में किया । वास्तव में, रेटजेल ने वर्तमान राजनीतिक भूगोल की आधारशिला रखी जो बाद में भूगोलवेत्ताओं के लिए मार्गदर्शक रही ।

20**वीं शताब्दी में राजनीतिक भूगोल** – राजनीतिक भूगोल का वास्तविक विकास 20वीं शताब्दी से आरम्भ हुआ । इसके प्रारम्भिक काल में जर्मन भूगोलवेत्ताओं ने 'जियोपोलिटिक' नाम से राजनीतिक भूगोल को राज्य विस्तार एवं युद्ध प्रवर्तक के रूप में प्रस्तुत किया । इस काल में रूडोल्फ केजेलेन, कार्ल हाशोफर आदि ने इस विचारधारा को प्रस्तुत किया । विश्व शक्ति विश्लेषण एवं सामरिकता से सम्बन्धित अन्य भूगोलवेत्ताओं में एल्फ्रेड थायेर महान, मैकेण्डर स्पाइकमेन, एलेक्जेन्डर–डी–सेवरस्की आदि थे ।

वर्तमान शताब्दी में राजनीतिक भूगोल के विविध पक्षों का विकास हो रहा है । राज्य प्रशासन, निर्वाचन, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, राजनीतिक घटनाक्रम आदि का प्रमुखता से अध्ययन किया जा रहा है । वर्तमान राजनीतिक भूगोलवेत्ताओं में प्रमुख हे–हार्टशोर्न, हिवटिलेसी, स्टेफेन जोन्स, जीन गॉटमेन, नॉरमन पोण्ड्स ओ.एच.के.स्पेट, जे.आर.वी. प्रेस्कॉट, ए.ई.मूडी आदि ।

**बोध प्रश्न** – 4

1. राजनीतिक क्षेत्रों के अध्ययन के लिए 'संयुक्त क्षेत्र सिद्धान्त' का प्रतिपादन किसने किया?
2. किन्हीं दो विशिष्ट राजनीतिक तथ्यों के नाम क्या हैं?
3. प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् हुए जनमत संग्रह का अध्ययन करने वाले विद्वान कौन थे?
4. राजनीतिक भूगोल के किन्हीं दो प्रारम्भिक प्रवर्तकों के नाम क्या हैं?
5. विलियम पेटी किस काल के भूगोलवेत्ता थे?

## 1.4 सारांश (Summary)

राजनीतिक भूगोल वातावरण एवं मानव में सम्बन्ध स्थापित कर पृथ्वी–तल पर व्याप्त विविधताओं का वर्णन करके, उन भौगोलिक कारणों को भी स्पष्ट करता है जिनके कारण क्षेत्रीय असमानताएँ उत्पन्न होती हैं । अत: राजनीतिक भूगोल, भूगोल की एक महत्वपूर्ण एवं विकसित शाखा है । प्राचीनकाल से ही राजनीतिक भूगोल को परिभाषित करने का प्रयास किया गया । इनमें काण्ट, विगर्ट, कार्लसन, हार्टशोर्न, पोण्ड्स मूडी, कोहेन, प्रेसकॉट, रिचर्ड मूर आदि विद्वानों ने राजनीतिक भूगोल को परिभाषित कर इसकी विषय–वस्तु को भी स्पष्ट किया । इन सभी विद्वानों के विचार इस मूल तथ्य पर आधारित है कि "राजनीतिक भूगोल राज्य की सीमाओं, क्षेत्र एवं संसाधनों से सम्बन्धित है एवं राजनीतिक क्रियाओं का मानव और आर्थिक भूगोल पर पड़ने वाले प्रभावों को व्यक्त करता है । किसी भी राज्य के तीन तत्व–क्षेत्र, मानव और राजनीतिक व्यवस्था होते हैं । इनमें से किसी भी एक तत्व के अभाव में राज्य अस्तित्व–रहित हो जाता है । राजनीतिक भूगोल में राज्य के भौगोलिक स्वरूप, प्राकृतिक संसाधनों, राज्य की जनसंख्या, राजनीतिक समझौतों, विश्व की राजनीतिक घटनाओं, भौगोलिक उपक्रमों, निर्वाचनों, अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों आदि का अध्ययन किया जाता है ।

राजनीतिक भूगोल एक अन्तर्विषयक विज्ञान है जो कि विशेषरूप से इतिहास, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध और राजनीति विज्ञान से सम्बन्धित है । व्यावहारिक दृष्टि से राजनीतिक भूगोल राज्य के प्राकृतिक वातावरण का ज्ञान, राज्य की आन्तरिक समस्याओं का समाधान, देश की सुरक्षा में सहायक, शासन व्यवस्था का भौगोलिक दृष्टि से मूल्यांकन, निर्वाचन प्रणाली का ज्ञान, अन्तर्राष्ट्रीयता का विकास एवं विश्व शान्ति में सहायक होता है ।

राजनीतिक भूगोल का अध्ययन 2,000 वर्षो से भी प्राचीन है, किन्तु इसका एक विशिष्ट विषय के रूप में उद्भव 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध हुआ । इसकी विकास प्रक्रिया को तीन वर्गो – वातावरण सम्बन्धों का अध्ययन, राष्ट्रीय शक्ति अध्ययन एवं

राजनीतिक क्षेत्रों का अध्ययन में विभक्त किया जा सकता है । वातावरण एवं मानव के सम्बन्धों को प्रारम्भ में हिप्पोक्रेटस, प्लेटों, अरस्तु एवं स्ट्रेबो ने व्यक्त किया । 16वीं शताब्दी में बोदिन, 17वीं शताब्दी में मॉन्टेस्क्यू ने जलवायु, धरातल, महाद्वीप एवं द्वीप का मनुष्य, राजनीतिक व्यवस्था एवं नियमों पर प्रभाव व्यक्त किया । 19वीं शताब्दी में जर्मन भूगोलवेत्ताओं कार्ल रिटर एवं फ्रेडरिक रेटजेल ने वातावरण से सम्बन्धित विचारों को परिमार्जित ढंग से व्यक्त किया । राष्ट्रीय शक्ति के अध्ययन में उन सभी कारणों का विश्लेषण किया जाता है जो एक राज्य' की राजनीतिक, शक्ति को प्रभावित करते हैं । रेटजेल ने 'जैविक राज्य' की विचारधारा प्रस्तुत की । केजेलेन ने सर्वप्रथम जियोपोलिटक शब्द का प्रयोग किया जिसे हाशोफर ने अपने सिद्धान्त के लिए प्रयुक्त किया । अमेरिकी विद्वान एल्फ्रेड थायेर महान ने 'सामुद्रिक शक्ति' को। अधिक महत्व दिया । 'हृदय क्षेत्र का सिद्धान्त' का प्रतिपादन ब्रिटिश भूगोलवेत्ता मैकेण्डर ने सन् 1904 में किया । अमेरिकी भूगोलवेत्ता स्पाइकमेन ने 'रिमलैण्ड का सिद्धान्त' का प्रतिपादन किया ।

20वीं शताब्दी मे राजनीतिक भूगोल में राजनीतिक क्षेत्रों का सैद्धान्तिक अध्ययन, राजनीतिक उपक्रमों का अध्ययन एवं विशिष्ट राजनीतिक क्षेत्रों का अध्ययन किया जाने लगा ।

वर्तमान शताब्दी में राजनीतिक भूगोल मे विविध पक्षों का विकास हो रहा है । इसमें राज्य प्रशासन, निर्वाचन, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, राजनीतिक घटनाक्रम आदि का प्रमुखता से अध्ययन किया जा रहा है ।

## 1.5 शब्दावली (Glossary)

| | | |
|---|---|---|
| अन्तर्विषयक (Interdisciplinary) | : | एक से अधिक विषयों से सम्बन्ध होना । |
| भौगोलिक पर्यावरण (Geographical Environment) | : | प्राकृतिक एवं तत्वों से निर्मित किसी स्थान विशेष का वातावरण । |
| भौगोलिक स्वरूप (Geographical Form) | : | इसमें किसी राज्य के विस्तार, वातावरण एवं राजनीतिक सीमाओं का अध्ययन किया जाता है । |
| भू_राजनीति (Geopolitic | : | राजनीतिक भूगोल में राष्ट्रीय शक्ति के अध्ययन की प्रक्रिया में इस शब्द का विकास हुआ । केजेलेन ने सर्वप्रथम जियोपोलिटिक शब्द का प्रयोग किया जिसको हाशोफर ने अपने सिद्धान्त के लिए प्रयुक्त किया। |
| हृदय क्षेत्र सिद्धान्त : (Heartland Theory) | : | ब्रिटिश भूगोलवेत्ता मैकेण्डर द्वारा प्रतिपादित विश्व शक्ति के अध्ययन से सम्बन्धित सिद्धांत। |
| रिमलैण्ड सिद्धान्त (Rimland Theory) | : | अमेरिकी भूगोलवेत्ता स्पाइकमेन द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त । इसमें उन्होंने 'हार्टलैण्ड के चारों ओर स्थित देशों को रिमलैण्ड |

| | | |
|---|---|---|
| | | बताया और उन्हीं को सामाजिक दृष्टि से सबसे अधिक उपयुक्त माना |
| संयुक्त क्षेत्र सिद्धान्त (Unified Field Theory) | : | स्टीफन जोन्स द्वारा सन् 1955 में राजनीतिक क्षेत्रों के अध्ययन के लिए प्रतिपादित सिद्धान्त । |

## 1.6 सन्दर्भ ग्रन्थ (References)


| | |
|---|---|
| Carlson, L. | Geography and World Politics, Prentice–Hall, 1958 |
| Dikshit, R.D. | Political Geography, Tata McGraw Hill, N.Delhi, 2004 |
| Hartshorne, R. | The Functional Approach in Political Geography A.A.A.G., Vol.40, 1950, pp, 95–130. |
| Prescott, J.R.V | Political Geography, Methuen, London, 1972. |
| Pounds, N.J.G. | Political Geography, McGraw–Hill, 1963. |
| Sukhwal, B.L. | Modern Political Geography of India, Sterling, N.Delhi,1985 |
| सक्सेना, एच.एम. | राजनीतिक भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, 2098 |


## 1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

**बोध प्रश्न** – 1

1 .Political Geography

2 .ए.ई.मूडी

3 .रिचर्ड मूर

4 .भौगोलिक विस्तार, वातावरण एवं राजनीतिक सीमाएँ

5 .भाषा, धर्म, जाति आदि

**बोध प्रश्न** – 2

1 पोलिटिक्स

2 .कार्ल रिटर एवं फ्रेडरिक रेटजेल

3 रेटजेल ने

4 .रूडोल्फ केजेलेन ने

5 .रिमलैण्ड का सिद्धान्त

**बोध प्रश्न** – 3

1 .स्टीफन जोन्स ने

2 .सीमा एवं राजधानी

3 एस.वामबाघ ने

4 .प्लेटो, अरस्तू

5 17वीं शताब्दी के

## 1.8 अभ्यासार्थ प्रश्न

1 राजनीतिक भूगोल को परिभाषित करते हुए इसके क्षेत्र का विवेचन कीजिए ।

2 राजनीतिक भूगोल का अना सामाजिक विज्ञानों से सम्बन्ध को स्पष्ट लीजिए ।

3 राजनीतिक भूगोल की व्यावहारिक उपयोगिता को स्पष्ट कीजिए ।

4 राजनीतिक भूगोल के विकास–क्रम को संक्षेप में लिखिए ।

5 राजनीतिक भूगोल में राष्ट्रीय शक्ति से सम्बन्धित विचारों की व्याख्या कीजिए ।